Vol. 7, Issue: 4, April: 2019
ISSN:(P) 2347-5404 ISSN:(O)2320 771X

२१ वीं सदी में अध्यापक शिक्षा

अजयकुमार हसमुखभाई जादव
शोध छात्र
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपूर

भारतीय शिक्षा का इतिहास अति प्राचीन है। यहाँ वैदिक' काल से ही शिक्षक प्रशिक्षण का विकास हो चुका था। तत्कालीन समय में यहाँ कक्षा नायकीय पद्धति का प्रचलन था। इससे कुछ शिष्य गुरु होने का प्रशिक्षण सहजता से ही प्राप्त कर लेते थे। वर्त्तमान समय मैं इसे छात्राध्यापक पद्धति कहते हैं। बोद्ध शिक्षा प्रणाली में शिक्षक बनने के लिए पूर्ण भिक्षु होना आवश्यक था। शिक्षक बनने के इच्छुक भिक्षु धर्म दर्शन एवं अन्य विषयों का उच्च ज्ञान प्राप्त करते थे। साथ ही अपने से निम्म स्तर के शिष्यों को पढाते थे। मध्यकालीन मुस्लिम शिक्षा प्रणाली में मदरसों में कक्षा नायकीय प्रणाली प्रचलित तो थी, परन्तु इसका उददेश्य शिक्षक तैयार करना नहीं था, शिक्षकों का कार्यभार कम करना था। इस प्रकार कक्षा नायकीय प्रणाली में श्रेष्ठ छात्रों को अध्यापक का व्यावहास्कि प्रशिक्षण प्राप्त हो जाता था।

हमारे देश में आधुनिक शिक्षण प्रशिक्षण (अध्यापक शिक्षा) का प्रारम्भ यूरोपीय जातियों ने किया। प्रारम्भ में तो ये भी शिक्षकों को केवल विषयों के प्रशिक्षण में प्रशिक्षित करते थे, परन्तु आगे चलकर इन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षा और शिक्षण के मूल तत्वों का सैद्धान्तिक ज्ञान कराना भी प्रारम्भ कर दिया। वर्तमान समय मैं ' शिक्षक प्रशिक्षण अध्यापक शिक्षा के रूप में विकसित है। प्राचीन काल में अध्यापन को एक सेवा के रूप में देखा जाता था, जब ज्ञानवान वने एक परम पवित्र और महत्त्वपूर्ण सामाजिक हित के कार्य के रूप में स्वीकृति और मर्यादा दी जाती थी। अर्वाचीन काल में यह एक व्यवसाय का रूप लेता गया और अध्यापक वेतन लेकर उसके एवज में ज्ञान देने का कार्य करने लगे। आधुनिक काल में इसे एक उद्यम या आजीविका का स्वरूप प्रदान किया जा रहा है, क्योकि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस दिशा में अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी है। राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्धारा भी अध्यापक को आजीविका के रूप में मान लिया गया है और इसके गुणात्मक सुधार पर बल दिया गया।

प्राचीन काल में अध्यापन योग्यता को एक जन्मजात प्रकृति प्रदत्त योग्यता स्वीकार किया जाता है। उस समय यह मान्यता थी कि अध्यापक बनने वाला व्यक्ति जन्म से ही अध्यापक सम्बन्धी प्रतिभा से

सम्पन्न होता है । उन्हें किसी प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है । कालान्तर में इस मान्यता का खण्डन किया जाने लगा और अध्यापकों के प्रशिक्षण एवं शिक्षण पर जोर दिया जाने लगा।

श्री अरविन्द का कहना था कि "अध्यापक राष्ट्र की संस्कृति के एक ऐसे चतुर माली होते हैँ, जो संस्कारों की जडों मेँ खाद देते हैँ और अपने श्रम से उन्हें खींच खींच कर महाप्राण शक्तियाँ बनाते हैं ।" वर्त्तमान समय में भारतीय समाज में जातिवाद, प्रान्तीयता, जनसंख्या वृद्धि, आर्थिक असमानता, साम्प्रदायिकत्तावाद, निरक्षरता, बेरोजगारी, राजनेतिक अस्थिरता जैसी अनेकानेक समस्यायें हैँ । समाज में चारों ओर सांस्कृतिक अस्थिरता, हिंसा, अन्याय, आतंकवाद, अनैतिक कार्य, नारी शोषण, वर्ग संघर्ष, अनुशासनहीनता एवं स्वार्थपरता का ताण्डव हो रहा है तथा सामाजिक व्यवस्था एवं कानून व्यवस्था समाप्त होती जा रही है । ऐसी सामाजिक विघटन की विषय परिस्थितियों में एक कुशल अध्यापक ही नवीन समाज का निर्माण कर सकता है किसी भी देश की सामाजिक व्यवस्था मेँ अध्यापकों का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है । अतएव अध्यापक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शैक्षिक तकनीकी माध्यम से शिक्षा कौशलों का विकास करना है । अतएव अध्यापक को शैक्षिक तकनीक का ज्ञान होना आवश्यक है ।

शैक्षिक प्रक्रिया के तीन महत्वपूर्ण ध्रुव होते हैं -शिक्षक, शिक्षार्थी एवं पाठ्यक्रम| इनमें शिक्षक का स्थान महत्त्वपूर्ण है । शिक्षक ही एक ऐसा मानवीय साधन है जो किसी भी पाठ्यवस्तु एवं उसे प्रस्तुत करने वाली विधियों एवं सहायक सामग्री का प्रभावी उपयोग कर सकता है । शिक्षार्थी का विकास से सम्बन्धित समस्त प्रक्रिया का प्रभावशाली सम्पादन एक शिक्षक की योग्यता एवं कुशलता पर ही आश्रित होता है ।

भूमण्डलीकरण और बाजारीकरण के इस दौर में मानवीय जीवन से सम्बन्धित विभिन्न प्रक्रियाओं के यंत्रीकरण पर अधिक बल दिया जाने लगा है । यंत्रीकरण का स्पष्ट प्रभाव उद्योग, वाणिज्य, सुरक्षा आदि के सायन्हीन्साय शैक्षिक क्षेत्र पर भी दिखायी देता है । इस प्रवृत्ति के फलस्वरूप शिक्षा प्रक्रिया को प्रभावी एवं उद्देश्य केन्द्रित बनाने, कठोर शिल्प उपागमों बहुआयामों एवं कम्प्यूटर के प्रयोग को महत्त्व दिया जा रहा है । शिक्षा के क्षेत्र में यंत्रीकरण की इस प्रवृति ने शिक्षकों की भूमिका पर अनेक सवाल खड़े कर दिए हैं । यह तो स्पष्ट है कि मशीनों के प्रयोग होने के बाद भी शिक्षक का महत्त्व भविष्य में यथावत् बना रहैगा । कारण यह है कि भले ही कठोर शिल्प उपागमो के आधार विद्यार्थियों का ज्ञानात्मक विकास हो जाय; परन्तु उनके शारीरिक एवं संवेगात्मक पक्षों का विकास

करने मेँ शिक्षक की भूमिका महत्वपूर्ण है। बिना शिक्षक ही सहायता से शिक्षार्थी का सवणिण विकास सम्भव नहीं है। इतना ही नहीं कम्यूटर के संचालन हैतु भी शिक्षक की सहायता लेनी पडती है। यहीँ कारण है किं कम्यूटर्स के प्रयोग से पूर्व शिक्षकों को इसका प्रशिक्षण देने की आवश्यकता है। इस सन्दर्भ में 21वीं सदी में शिक्षकों की भूमिका का उल्लेख निम्म बिन्दुओं के अन्तर्गत किया गया है –

- शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक तकनीकी का विकास वर्तमान समय की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। एक शिक्षक के लिए शिक्षण तकनीकी का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक डै। शिक्षण तकनीकी के आधार पर किये जाने वाले शिक्षण से यह स्पष्ट ही गया है कि इसके माध्यम से ही औपचारिक शिक्षण प्रक्रिया को सफ़ल बनाना सम्भव है।
- जनसंख्या वृद्धि के फलस्वरूप विद्यालयों में बढती हुई भीड को कुछ मात्रा में नियुक्त शिक्षकों के द्वारा नियंत्रित कर पाना कठिन है। 70-80 अथवा इससे भी अधिक शिक्षार्थियों के बिकास का उत्तरदायित्व एक शिक्षक को नहीं दिया जा सकता है। इस दृष्टि से आने वाले समंय मेँ शिक्षालयों में कम्यूटरों के प्रयोग को ही महत्व दिया जाएगा। कम्यूटर के समुचित प्रयोग हैतु शिक्षकों को भी बिशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होगी।

एक शिक्षक के लिए कफ्यूटरों का संचालन, कम्यूटरों से सम्बन्धित बिभिन्न तकनीकियों की जानकारी तथा कम्यूटर में शैक्षिकप्रोग्राम बनाकर प्रेषित करने सम्बन्धित कौशल में दक्ष होना आवश्यक होगा। इक्सीसवी शताब्दी और कम्प्युटर के इस युग में भावी पीढी जो राष्ट्र की आधारशिला है, को शिक्षित करने वाले शिक्षकों की शिक्षा के शिक्षा तकनीकी के व्यावहारिक ज्ञान मेँ कमी होने के कारण शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणवत्ता पर सवाल उठ खड़ा होता है। वह व्यक्ति जिसका झुकाव अभिवृत्ति, अभिरुचि लगाव है जो निरन्तर सीखने-सिखाने के लिए तत्पर है। उसकी योग्यता को सही निर्देशन न देकर, विविध नियमों एवं प्रश्नचिन्हों के दायरे में खडा करके एक अयोग्य तथा अभिरुचि विहीन व्यक्ति की नियुक्ति कर दी जाती है। अतएव शिक्षकों की शैक्षिक एवं व्यावसायिक तैयारी में अभिवृत्ति के लिए प्रशिक्षण विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम का पुन: निर्माण किया जाय। इसके लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं –

- औद्योगीकरण की तीव्र गति के फलस्वरूप वर्तमान में यह आवश्यक हो गया है कि छात्रों को व्यावसायिक पाठ्यक्रमों पर आधारित ज्ञान प्रदान किया जाय।
- पुराने छात्रों की एक प्रभावशाली एसोसिएशन होनी चाहिए, जिसकी सभाओ में योजनाओं, पाठ्यक्रमों तथा नवीन प्रयोगों एवं आयोगों के सम्बन्ध में बाद विवाद का आयोजन किया जा सके।
- वर्त्तमान समय स्पर्धात्मक तथा तकनीकी युग का होने के कारण कम्प्युटर का ज्ञान आवश्यक है, अत: अध्यापक शिक्षा के पाठ्यक्रम में इसको भी स्थान प्रदान किया जाय।

- इस प्रकार के पाठ्यक्रम को संप्रेषित करने के लिए यह आवश्यक होगा कि भविष्य में अधिकाधिक शिक्षकों में इस प्रकार का कौशल उत्पन्न किया जाय जो औद्योगीकरण की तीव्र रफ्तार की बागडोर अपने हाथ में रख सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. एडोल्फ हिटलर, मेन कैम्फ
2. नवल, नंदकिशोर भारतीय मूल्य की चिन्ता का विकास
3. बैकेट, सैमुअल वेटिंग फार गोडो
4. भारती, धर्मवीर अन्धायुग
5. मया, शंकर सिंह, अध्यापक शिक्षा असमंजस में, अध्ययन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्श, नई दिल्ली
6. स्नातक, विजयेन्द्र विमर्श के क्षण